अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता २०२० हेतु चयनित गीत

अणुव्रत चेतना

रचनाकार - आचार्यश्री महाश्रमण जी

मानव की जीवन शैली संयम से भावित हो।
निश्छलता, करुणा, मैत्री से मन आप्लावित हो।।

हो व्यवहार विनिर्मल नैतिकता से संयुत।
प्रामाणिकता वाणी में, पल-पल परिलक्षित हो।।१।।

हो घृणा नहीं मानव से मानव के चिन्तन में।
मानुष-मानस का कण-कण, सद्भाव प्रभावित हो।।२।।

मुख मंदिर का मदिरा से किंचित् भी स्पर्श न हो।
ना कभी नशा करना है, नर-नर संकल्पित हो।।३।।

अणुव्रत की 'महाश्रमण' वर सौरभ फैलाएं हम।
तुलसी गुरु कृपा सुरभि से जन-जन मन सुरभित हो।।४।।

लय - प्रभु पार्श्व देव चरणों में शत शत ...